रंग भरो 402

शताक्षी, रायपुर

रवि
बिलासपुर

पूजा
बिलासपुर

अग्रिमा
गाजियाबाद

टिकेश
कटगी

सूर्यकांत
बिलासपुर

पूर्वा
धमतरी

राजवीर
दुर्ग

पूर्वा
भिलाई

कुशाग्र
धमतरी

श्रीयांश
भिलाई

इनके भी चित्र प्रशंसनीय रहे

पूर्वी, बालौद बाजार। लक्ष्य, भिलाई। अतुल, बिलासपुर। आयुषी, बिलासपुर। मोहन, रोहतक। रविंद्र, रोहतक। महेंद्र, रोहतक। दीपक, रायपुर। रंजीत, राजनांदगांव। नागेश, रोहतक। विजय, धमतरी। अजय, कटगी। सूरज, दुर्ग।

अपनी किताबें

चंद्रप्रकाश

पुरानी कार

बच्चों, तुम अपने दोस्तों के साथ काल्पनिक घर बनाने का खेल खेलते होगे। घर की जरूरत सभी को होती है। इस रंगीन चित्रपुस्तक 'हमारा अपना घर' में कुछ बेघर बच्चों के जीवन का एक किस्सा बुना गया है। कहानी में एक दिन दुलारी और उसके दोस्त इधर-उधर से मिली चीजों को जुटाकर घर का खेल खेलना शुरू ही करते हैं कि अचानक बारिश होने लगती है। अब सड़क किनारे खड़ी पुरानी कार उनका आसरा बनती है। उस कार के सहारे वहां बीती रात, उनके जीवन में पहली बार किसी सच के घर का अनुभव दे जाती है। ●

किताब- हमारा अपना घर, **लेखिका**- मेघा अग्रवाल, **चित्रांकन**- हबीब अली, **मूल्य**- 150 रुपए , **प्रकाशक**- तूलिका पब्लिशर्स, चेन्नई

कहानियों का गुलदस्ता

यह बच्चों की लिखी उन्नीस छोटी-छोटी रचनाओं की किताब है। इसमें उन्होंने कुछ अपने मन की बातें, कुछ देखी-सुनी घटनाएं और कुछ नन्हे से किस्से लिखे हैं। ये सारे विषय भी तरह-तरह के हैं और किस्सों को कहने का तरीका भी बहुत अलग है। इन्हें पढ़ते हुए कई तरह की नई बातों और अनुभवों का पता चलता है। 'मैंने साइकिल चलाई', 'हमारे डॉक्टर', 'होली' और 'भैंस' आदि रचनाओं में बच्चों के मन की बातें पढ़ी जा सकती हैं। वहीं 'बारिश में फंसा कुत्ता', 'भूत' और 'फसलों की कटाई' रचनाएं भी पढ़ने में रोचक हैं। ●

किताब- बकरी की साइकिल, **लेखन और चित्रांकन**- बच्चों का एक समूह, **मूल्य**- 75 रुपए, **प्रकाशक**- एकलव्य, भोपाल